>

Title: Need to make available generic medicines to the people at affordable price in the country.

श्री राकेश सिंह (जबलपुर): अस समय देश में दवा उद्योग तेजी से फल फूल रहा है । जीवन रक्षक दवाएं ऊंची-ऊँची कीमतों पर बाजार में बिक रही हैं । इंसान की मजबूरी है इसलिये उसे इस कीमत पर दवा लेनी ही है । जिसकी जेब जितनी बड़ी है, उतना इलाज वो ले रहे हैं । मुश्किल में केवल माध्यम और निम्न वर्ग का वह इंसान है जिसके पास संसाधन और स्रोत सीमित हैं । यह सही है कि देश में प्रभावी चिकित्सकीय प्रगति हुई है लेकिन घरों में प्रिस्क्रिप्शनों की संख्या में वृद्धि के साथ-साथ दवाओं की खपत में भी बेतहाशा वृद्धि हुई है । वृद्धावस्था में दवाओं की आवश्यकता तो होती ही है किन्तु देश के युवा और बच्चे भी गंभीर बीमारियों से ग्रस्त हो रहे हैं और दवाओं पर निर्भर हैं । दवा उद्योग के लिये लाभ की स्थिति तो यही होगी कि उनके उत्पादों की मांग बनी रहे । लेकिन कीमत तय करने वालों ने यह कभी नहीं सोचा है कि दवा की इस कीमत पर सबसे अधिक लाभ में कौन है, दवा कंपनी या फिर मरीज महोदया, सरकार जेनरिक दवाओं का प्रचार कर रही है कि ये दवाएं सस्ती हैं, सुलभ हैं । लेकिन क्या चिकित्सक जेनरिक दवाएं लिखते हैं ? आम आदमी जेनरिक और ब्रांडेड के अंतर को नहीं समझता । आज बड़ी और गंभीर बीमारियों के लिये भी जेनरिक दवाएं उपलब्ध हैं । लेकिन खुले बाजार में मिलने वाली एक दवा के ब्रांडेड और जेनरिक वर्जनों की कीमतों में ज्यादा अंतर नहीं है । तब कैसे मरीज को जेनरिक दवा खरीदने में फायदा होगा, यह समझ से परे हैं। जेनरिक दवा पर जितनी कीमत प्रिंट होती है उसमें कई गुना मुनाफा जुड़ा होता है । अधिकतर होता यह है कि दवाएं फुटकर विक्रेता से खरीदी जाती हैं और दवा पर लिखी कीमतों पर ही दवा बेची जाती हैं । यह उचित नहीं है कि जेनरिक दवा, जिसका निर्माण आम आदमी को सस्ता इलाज मिलने के लिये होता है, वह उसे महंगी कीमत पर मिले । अतः केन्द्र सरकार यह सुनिश्चित करे कि सभी बीमारियों के लिये जेनरिक दवायें उपलबध हों और चिकित्सक उन्हें प्रिस्क्रिप्शन पर स्पष्ट रूपए से लिखे ताकि ससता इलाज व सस्ती दवायें आम आदमी को मिल सकें ।